डायमण्ड
अंक : 35
मूल्य : 30/-

सुखद जीवन का आधार

वास्तु एवं ज्योतिष

एक सम्पूर्ण पत्रिका

- वास्तु और ज्यातिष का सम्बंन्ध
- वास्तु से करें लक्ष्मी प्रवेश
- वास्तु ऊर्जा: एक नजर में
- अष्ट दिशा और वास्तु
- दस दिक्पाल और-दस दिशा के स्वामी ग्रह
- आस्था और वास्तु
- लाल किताब के उपयोगी टोटके
- फेंगसुई के सिद्धान्त में आपका घर-संसार
- ज्योतिष और राजयोग
- फेंगसुई से सजाएं अपना घर
- कैरियर में सफलता
- रत्न और रंग का महत्व जानें
- ज्योतिष और संतान योग
- ग्रहों के ऋण प्रभाव एवं उपाय
- रत्न धारण में ज्योतिष का महत्व
- पैर के आधार पर फलादेश
- वास्तु भूखण्ड और वास्तु वेध भूखण्ड की करें पहचान
- उत्तर-पश्चिम में घर के मुखिया का कमरा एक गंभीर वास्तु दोष

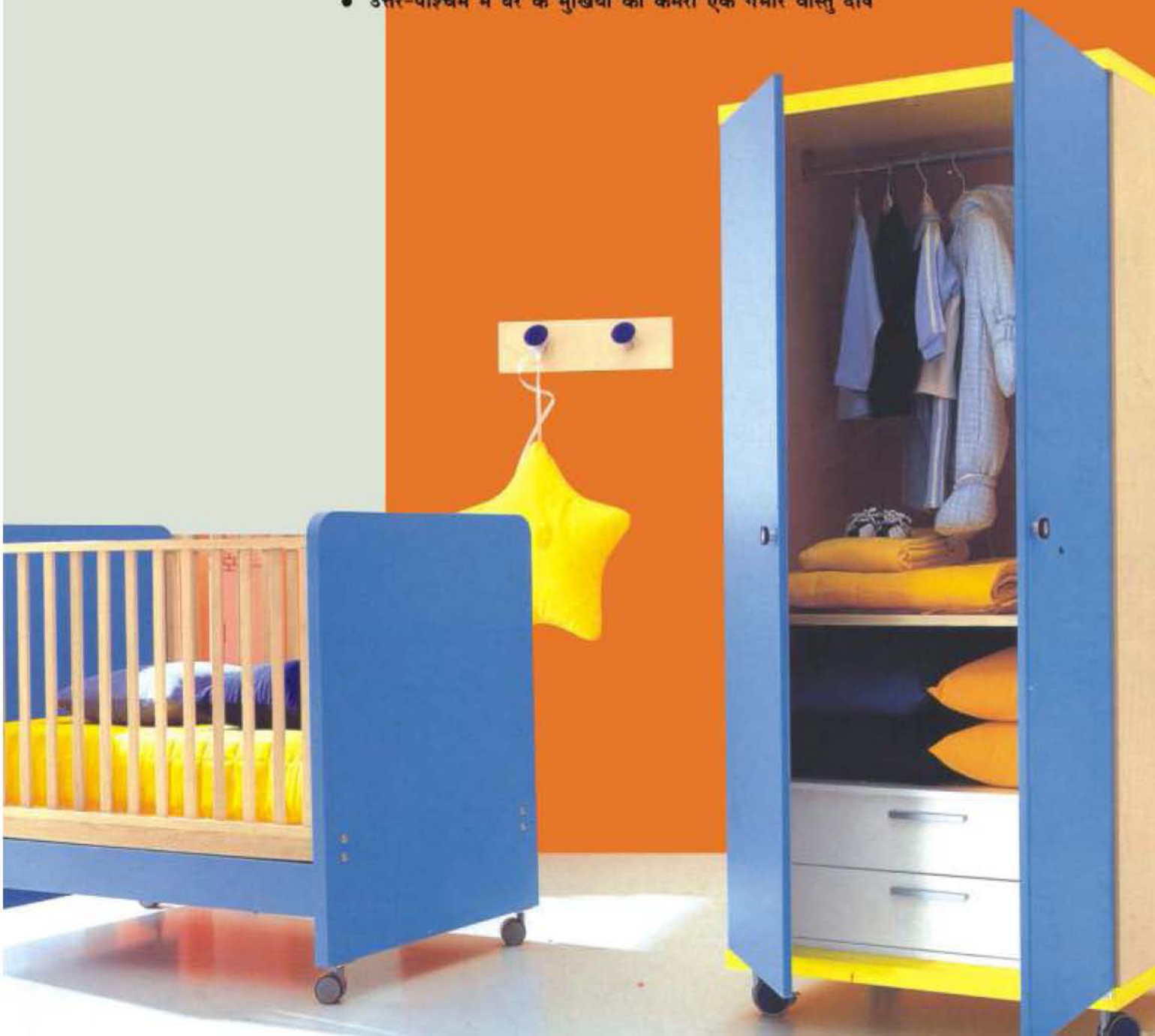

डायमण्ड कॉमिक्स प्रकाशन समूह के गौरवशाली प्रकाशन

अपने निकट की बुक स्टाल से खरीदें या हमें लिखें

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि., 257, दरीबा कलां, दिल्ली-110006 E-mail : diamondcomicsindia@gmail.com

संपादकीय

हमें कई बार अपने जीवनकाल में ऐसी-ऐसी विषम परिस्थितियों से जूझना पड़ता है कि हमें लगने लगता है कि कोई भी दुष्कर्म न करने पर, कोई भी गलत कार्य न करने पर भी हमारा सामना परेशानियों और समस्याओं से क्यों होता है? ऐसे में हमारा अन्तर्मन कह उठता है कि ईमानदारी और सच्चाई का जीवन जीने पर भी हम दुख क्यों पा रहे हैं? ऐसे में लाल किताब हमारी इस प्रकार की सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। हम अपने पाठकों को बता दें कि लाल किताब अपने आप में एक सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। इसके टोटके किसी भी समस्या, किसी भी रोग के लिए रामबाण सिद्ध होते हैं। पत्रिका के हर अंक में लाल किताब के अनुभूत टोटकों का जिक्र अवश्य होता है।

"वास्तु एवं ज्योतिष" पत्रिका में वास्तु एवं ज्योतिष पर विशेष प्रकाश डाला जाता है। वास्तुशास्त्र के द्वारा आवास संबंधी सभी प्रकार की जानकारी हम पाते हैं। सीधे-सीधे शब्दों में कहें तो वास्तुशास्त्र ज्योतिष के बिना अधूरा सा है। ज्योतिष विद्या के द्वारा हम अपनी जन्म कुण्डली के बारे में जान पाते हैं।

रत्नों का ज्योतिष के क्षेत्र में एक अलग ही स्थान है। इसी तरह हमारे जीवन में रत्न और रंगों का भी बहुत ज्यादा महत्व है। पत्रिका के इस अंक में इन दोनों के बारे में भी पाठकों को विस्तार से जानकारी दी गई है। इसके अलावा भी पत्रिका के इस अंक में पाठकों को नई-नई और जानकारियों से भी अवगत कराया गया है।

यह अंक आपको कैसा लगा? हमें इस बारे में लिखें!

हम आपके सुझावों का स्वागत करते हैं

आपका अपना

गुलशन राय

संपादक

इस अंक के आकर्षण

5 वास्तु एवम् ज्योतिष का सम्बंध
9 उत्तर-पश्चिम में घर के मुखिया का कमरा एक गंभीर वास्तु दोष
10 वास्तु ऊर्जा: एक नजर में
23 वास्तु भूखण्ड और वास्तु वेध भूखण्ड की करें पहचान
26 सीढ़ियों को रखें सुन्दर
27 अष्ट दिशा और वास्तु
30 आस्था और वास्तु
31 दस दिक्पाल और-दस दिशा के स्वामी ग्रह
34 दिशाएं और स्वास्थ्य
35 वर्गाकार भूखण्ड अति उत्तम
38 लाल किताब के उपयोगी टोटके
39 वास्तु विश्लेषण आवासीय व्यावसायिक भूखण्डों का
42 फेंगशुई के सिद्धान्त में आपका घर-संसार
50 ज्योतिष और राजयोग
51 कैरियर में सफलता
54 मिथुन लग्न-ज्योतिष और धन योग
56 रत्न और रंग का महत्व जानें
58 ज्योतिष और संतान योग
61 ग्रहों के ऋण प्रभाव एवं उपाय
64 रत्न धारण में ज्योतिष का महत्व
66 पैर के आधार पर फलादेश

11 वास्तु से करें लक्ष्मी प्रवेश

15 साज-सज्जा के 48 सौभाग्यशाली टिप्स

47 फेंगसुई से सजाएं अपना घर

Printed & Published by Gulshan Rai on Behalf of D.C. Magazine,257, Dariba Kalan,Delhi-6
Printed at Jain Offset Printers, 2864 Chail Puri, Kinari Bazar,Delhi.
RNI No. DL-HIN/2002/8598 Editor : Gulshan Rai

Publisher/Editor
Gulshan Rai
Mobile : 9810003062
Editorial Dept.
Vastu
Gulshan
9810003062
Jyotish
M.S. Kaul
9811157473
Address :
D. C. Magazines
H.O. : 257, Dariba Kalan,
Delhi - 110006
Phone : 23266232
B. O. : A-22, Gobind Villa
Sector- 63, Noida- 201307
Phone : 0120-4238008/9
E-maill :
Vastuevamjyotish@
diamondcomic.com
Webside :
www.diamondcomic. com
Artist :
Sandeep Dutta
Printer
Jain Offset
2864 Chail Puri, Kinari Bazar
Delhi

MEDIA OFFICES
DELHI
Gulshan Rai,
Mobile : 9810003062
K. Balakrishnan
Mobile : 9810998211

MUMBAI
Praveen Chandra,
Ms. C. Garima,
Mobile : 9820129206

KOLKATA
Ms. Sabita Mitra,
Phone : 9830045756

CHENNAI / BANGALORE
J. Jagannathan
Phone: 9840031079

HYDERABAD
A. Rajeshwar Rao
Phone : 040-24160571

AHMEDABAD
P. Vinod Naidu
Mobile : 079-31074332

POONA
Narendra Hiraskar
Mobile : 9823141793

INDORE
Swarn Shekhar Sinha,
Mobile : 09826600315

JAIPUR
Kamal Jain
Mobile : 9829028362

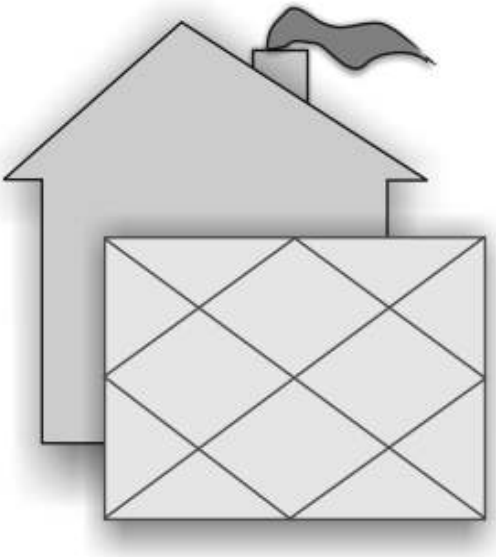

वास्तु एवम् ज्योतिष का संबंध

वास्तु शब्द 'वसु' या पृथ्वी से उत्पन्न है। पृथ्वी मूलभूत वास्तु है और सभी रचनाएं जो पृथ्वी पर स्थित हैं उनको भी वास्तु कहा जाता है।

वास्तु और कर्म : भाग्य, कर्म और स्थान- किसी भी घटना की पृष्ठभूमि में विद्यमान ऊर्जा सदैव तीन शक्तियों की सामूहिक क्रिया होती है। ये तीन शक्तियां हैं भाग्य, पृथ्वी और हमारे स्वकर्म। अत: मनुष्यों का जीवन तीन तत्वों द्वारा निर्धारित होता है। समय, स्थान और कर्म।

'समय' तत्व दृढ़ भाग्य है जो जन्म के समय पर निर्भर करता है। ज्योतिष विकार के अनुसार कुंडली में ग्रहों की स्थिति मनुष्य का भाग्य निर्धारित करती है। 'स्थान' तत्व जन्म स्थल या मनुष्य का आवास है, जो वास्तुशास्त्र व ज्योतिष के अध्ययन का विषय है। मनुष्य क्या करता है? कैसे करता है? कहां करता है? कब करता है? क्यों करता है? यही कर्म तत्व है। सही कर्म उसे भाग्यशाली बनाता है, गलत कर्म उसे दुर्भाग्य प्रदान करता है।

सभी तरह की तकनीकी उपलब्धियों के बावजूद भाग्य के सामने मनुष्य स्वयं को असहाय महसूस करता है। भारतीय दर्शन के अनुसार भाग्य मनुष्य को नियंत्रित करता है। भाग्य मनुष्य द्वारा पूर्व जन्मों में किये गए अच्छे-बुरे कर्मों का कुल जोड़ है। दृढ़ भाग्य हमारे नियंत्रण के बाहर है लेकिन ज्योतिष शास्त्र की सहायता से उसका पूर्वानुमान और अध्ययन किया जा सकता है। हम अपना भाग्य लेकर पैदा होते हैं। हमारे जन्म के साथ-साथ हमारे जीवन का 40 प्रतिशत भाग निर्धारित हो चुका होता है। यही निर्धारित करता है कि हमें क्या होगा और कब होगा? वैदिक ज्योतिषशास्त्र की सहायता से पूर्वानुमान किया जा सकता है।

भाग्य और वातावरण अवसर उपलब्ध कराते हैं, लेकिन यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह उन्हें पहचान कर कठिन परिश्रम, शिक्षा, अन्तर्ज्ञान और सद्गुण पूर्वक उनका उपयोग करें। हमारे कर्म जो अधिकांश स्वनिर्धारित हैं हमारे जीवन के लगभग 25 प्रतिशत भाग प्रभावित करते हैं।

'पृथ्वी' तत्व वास्तुशास्त्र का विषय है। वास्तुशास्त्र प्रकृति की शुभ शक्तियों का उपयोग करने और अशुभ शक्तियों के निराकरण की कला और विज्ञान है। यह हमारे जीवन के लगभग 35 प्रतिशत भाग को नियंत्रित करता है। विभिन्न स्थलों और वातावरण के अपने-अपने ऊर्जा स्रोत हैं। बाह्य परिस्थितियों में कुछ स्थानों पर किये गर्य कर्म सफल होते है, तथा कुछ अन्य स्थलों पर असफल। वास्तु शास्त्र व ज्योतिष वांछनीय सफलता प्राप्त करने के लिए सही वातावरण बनाने में सहायता करता हैं।

वास्तुशास्त्र ज्योतिष के बिना अधूरा है। ग्रह निर्माण आरम्भ करने, मुख्य द्वार की स्थापना, ग्रह प्रवेश व अन्य दैनिक कर्तव्यों हेतू शुभ मुहूर्त का चुनाव हमारे कर्मफल की गुणवत्ता को अधिक उत्तम बना सकता है। वास्तु विशेषज्ञ को ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तों और दैनिक अभ्यास से भली-भांति परिचित होना चाहिए। घर व्यक्ति को उसके भाग्य तथा स्वकर्मानुसार ही फल प्रदान करता है। आदर्श वास्तु भाग्य को कुछ हद तक ही बदल

वास्तुशास्त्र ज्योतिष के बिना अधूरा है। ग्रह निर्माण आरम्भ करने, मुख्य द्वार की स्थापना, ग्रह प्रवेश व अन्य दैनिक कर्तव्यों हेतू शुभ मुहूर्त का चुनाव हमारे कर्मफल की गुणवत्ता को अधिक उत्तम बना सकता है। वास्तु विशेषज्ञ को ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तों और दैनिक अभ्यास से भली-भांति परिचित होना चाहिए। घर व्यक्ति को उसके भाग्य तथा स्वकर्मानुसार ही फल प्रदान करता है। आदर्श वास्तु भाग्य को कुछ हद तक ही बदल सकता है। व्यक्ति की जन्मकुंडली और उसके स्वकर्म उसके जीवन मार्ग को तय करने में भारी भूमिका निभाते हैं।

सकता है। व्यक्ति की जन्मकुंडली और उसके स्वकर्म उसके जीवन मार्ग को तय करने में भारी भूमिका निभाते हैं। घर में कई लोग अलग-अलग उद्देश्यों और आकांक्षाओं के साथ, एक साथ एक परिवार की तरह रहते हैं। ऋग्वेद में भी एक प्रसंग मिलता है कि परिवार के लोग अपनी-अपनी अभिरूचियों के अनुसार विभिन्न कार्यों में संलग्न थे। उदाहरण के तौर पर मैं एक कवि हूँ, मेरे पिता एक चिकित्सक हैं, जबकि मेरी मां रोटी बनाने के लिए अनाज पीसती है। हमारे काम अलग हैं लेकिन हम एक साथ रहते हैं, हम धन कमाने के लिए विभिन्न कार्य करते हैं।

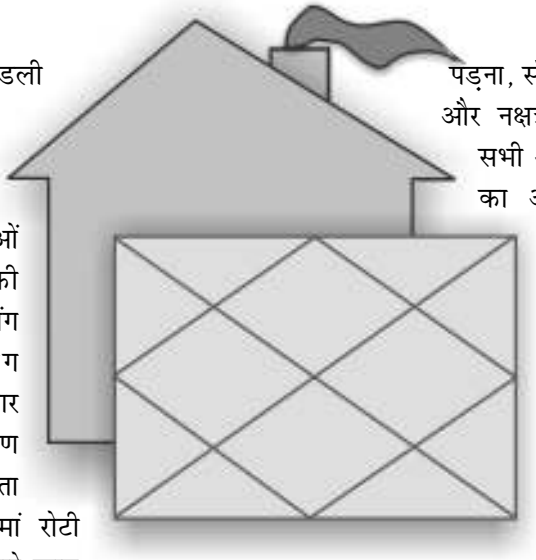

एक परिवार के रूप में रहने वाले सदस्य विभिन्न उद्देश्यों के होते हैं। एक पिता हो सकता है, अपने व्यापार पर ध्यान दे रहा हो, एक ग्रहणी जो घर के सदस्यों की देखभाल के लिए चिन्तित हो, गर्भवती माताएं, विवाह योग्य कन्या, पढ़ने वाले बच्चे, स्वास्थ्य के प्रति सजग बुजुर्ग, युवा लड़के-लड़कियां, जन्म मृत्यु, पूजा, मनोरंजन, बागवानी, जानवरों का पालन, स्वास्थ्य, धन, शिक्षा, विवाह सभी को समान अधिकार दिया जाता है। इसलिए घर की योजना बनाते समय ज्योतिष के भी सभी पहलुओं को जानें जिससे घर के सभी सदस्यों की मूल आवश्यकता पूरी हो सके।

ज्योतिष को भारतीय परंपरा में वैदिक ज्योतिष कहते हैं यह छह वेदांगों में से एक है और इसलिए वेदों जितना ही पुराना है। ज्योतिष का शाब्दिक अर्थ है-"भगवान की ज्योति या इच्छाओं की पूर्ति का मार्ग" क्योंकि हम भूत, भविष्य और वर्तमान का दर्शन करते हैं। ज्योतिष का मूल सिद्धान्त है कि ब्रमाण्ड में प्रत्येक वस्तु अन्य वस्तुओं को प्रभावित करती है और बदले में स्वयं उन वस्तुओं से प्रभावित होते हैं।

वास्तु शास्त्र को समझने के लिए ज्योतिष के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान होना अनिवार्य है। यह परम विज्ञान है। जन्म कुंडली हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों का परिणाम है। कर्म व्यक्ति के पूर्व जन्मों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक का कुल जोड़ है। हालांकि मनुष्य को स्वेच्छा की छूट दी गयी है, लेकिन हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों के फलों के दायरे में निहित है। एक ज्यातिषी ही बता सकता है कि किन कर्मों से बचा जा सकता है और किन कर्मों को भोगना पड़ेगा।

ज्योतिषशास्त्र, खगोलशास्त्र की सही समझ पर आधारित है। प्रत्येक बुद्धिमान ज्योतिषी, वास्तु विशेषज्ञ को पृथ्वी और अन्य ग्रहों का घूर्णन और परिक्रमण, ऋतुओं का बनना, ग्रहणों का पड़ना, सौर और चन्द्रयास आकाश मंडलीय ग्रहों और नक्षत्रों की सूक्ष्म जानकारी होनी चाहिए। सभी आकाशीय पिंडों की स्थिति और गतियों का आकलन हमारे मूलभूत निवास यानि पृथ्वी के संदर्भ में किया जाता है।

पृथ्वी के चारों ओर अनंत आकाश फैला हुआ है लेकिन हमारे लिए राशि चक्र फैला हुआ आकाश अधिक महत्वपूर्ण है। पृथ्वी की सभी दिशाओं में इस अनत: काल्पनिक विस्तार को खगोल कहते हैं।

वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नौ ग्रहों का धरती और उसके प्राणियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ये नौ ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहु, और केतु। इनमें से सूर्य एक तारा है। चन्द्रमा धरती का एक उपग्रह है। राहु और केतू छाया ग्रह हैं। जिन दो स्थानों पर चन्द्रमा रविमार्ग काटता है, उसके उत्तरी बिन्दू को राहु और दक्षिणी बिन्दु को केतू कहते हैं। हालांकि राहु केतू के शारीरिक पिंड नहीं है। लेकिन यह संवेदनशील और प्रभावशाली बिन्दू हैं। वैदिक शास्त्र भूकेंद्रिय पद्धति को मानता है। यह पद्धति हमारे इर्द-गिर्द घुमने वाले आकाशीय पिन्डों के प्रभाव को समझने के लिए आवश्यक है। ग्रह राशियों, वस्तुओं, जीवित प्राणियों, रंगों जीवन स्थितियों, धातुओं, दिशाओं, अंगों और इसी प्रकार अन्य वस्तुओं के स्वामी हैं। ग्रहों के इस प्रतिनिधित्व को वास्तु शास्त्र के विशेष संदर्भ में दिया गया है। जन्म के समय या दैनिक कार्यों में प्रत्येक ग्रह पृथ्वी पर में अपने बल, स्थिति और गौरव के अनुसार प्रभाव डालता है।

ज्योतिष संदर्भ में इन नौ ग्रहों का वास्तु से संबंध

नौ ग्रह किन कारणों में कारक हैं:-

सूर्य:- अंतरिक्ष में निकटम तारा, नौ ग्रहों में सबसे महत्वपूर्ण जैविक तत्व जैसे मूल, चार पैरों वाले प्राणी जैसे-घोड़े, पित्त, हड्डियां, सिर, राजा, गहरा लाल रंग, क्षत्रिय (योद्धा) मोटे याा खुरदरे कपड़े, पूर्व दिशा, अत्याधिक गर्मी, बुखार, आंख, आंखों की बीमारियां, दांतों की समस्याएं, वातशूल, अग्नि तत्व, कड़वा स्वाद, देखने की शक्ति, लाल कमल, गेहूं मजबूत बड़े वृक्ष, खुशबूदार जड़ी-बूटियां चतुर्भुजी आकार, कुलीनता, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के नेतृत्व में या किसी शासक के अधीन काम करना, कुशलता, अंहकार, तानाशाही, स्वास्थ्य, सत्ता, सृजनात्मकता, पुल्लिंग, पिता, गर्मी, पेट, अमीर लोग, कुलीन प्रशासक, हृदय, पेट, सोना, भगवान शिव की भक्ति, निश्चित और समस्वभाव, गायब-बछड़ा, आरोग्य, सिर के रोग, गंजापन, मिर्गी, उदारता, नेतृत्व, साथी से संबन्ध आदि इन सभी विषयों का कारक सूर्य है।

वास्तु में सूर्य-पूर्व दिशा, खुला स्थान, भव्य इमारतें, महान साभागार, खिड़की, लाल फूल, फूलों वाले पेड़, जंगल, पहाड़, राक गार्डन, कांटेदार वृक्ष, पक्का घर, ऊंचे घर, टीले, लाल रंग की मिट्टी, पक्की ईंटें, घर की प्रकाश व्यवस्था।

चन्द्रमा-(चन्द्र सोम)-सबसे तेज चलने वाला जैविक तत्व, जैसे मूल कुतर कर खाने वाले प्राणी, रेंगने वाले जीव बहुपदी जैसे कोल्ड, वात व कफ, खून, चेहरा, रानी, वैश्य, नये कपड़े, सफेद रंग, वायव्य दिशा, आलसीपन, सुस्ती, फेफड़ों की समस्याएं, मुख रोग, रक्त रोग, पाचन समस्याएं, पानी इकट्ठा होना, मानसिक रोग, जल तत्व, नमकीन स्वाद, स्वाद इंद्रिय, कुमुद, चावल, दूध या रस देने वाले पेड जल में रात के समय में फलने-फूलने वाले पदार्थ व फूल, जड़ी-बूटियां, ढक कर पकाये गये पदार्थ, चांदी, मोती, चन्द्रकान्त मणि, शुक्ल पक्ष शुभ और कृष्ण पक्ष अशुभ, कृषि, पशुपालन, संवेदनशीलता, स्त्रियों संबंधी कार्य, सही साथी से मिलन, परिवर्तन शील स्वभाव, भावनापूर्ण मन, आंखें, फेफड़े, मछली और अन्य जलजन्तु, मिर्गी, मानसिक रोग, मलेरिया बुखार, निद्रा विकार, मासिक धर्म, अतिसंवेदनशीनलता, अच्छी स्मरण शक्ति, फैशन, पहनावा, वर्षा ऋतु स्मरणशक्ति।

वास्तु में चन्द्रमा- वायव्य दिशा, बायीं खिड़की, उत्तर के मध्य में दरवाजा, जलमय स्थान, मछलियां स्त्रियों के निवास, स्नान घर, भोजन कक्ष, बैठक, फव्वारा, तालाब, रसोई कपड़े धोना, दवाई का डिब्बा, प्यार, स्नेह, सफेद चावल, सफेद मिट्टी, संगमरमर, सफेद रंग के अन्य निर्माण, पशुपालन, गौशाला, तीखी ढलान, सफेद रंग के अन्य निर्माण यह सभी स्थितियां चन्द का कारक हैं।

मंगल (कुंज भौम) धरती पुत्र, अजैव तत्व, जैसे धातु, चतुष्पद, अस्थि मज्जा, मांसपेशियां, सेनापति, क्षत्रिय, अत्यधिक ताप, अग्नि तत्व, मांस उत्तेजना, जड़ी-बूटियां, रंग-बिरंगें कपड़े, तीखा स्वाद, लाल मसूर, शराब, प्रोटीन युक्त भोजन, मशीन, गर्मी, शल्य चिकित्सक, जासूस, चोर, बुरे लोगों से दोस्ती, हथियार, खतरनाक व साहसिक कार्य, गुस्सा, रूखा स्वभाव, बहादुरी साहस, रक्षा, सिर, यौनांग, प्रतिस्पर्धा, चोर, हिंसा, अनैतिक संबंध या महिलाओं का मासिक धर्म, सिर की चोट।

वास्तु में मंगल-दक्षिण दिशा, खम्भें, ठोस दीवारें, रसोई, आग के पास के स्थान, विद्युत जेनरेटर, भट्टी, छत, मिट्टी के बर्तन, नुकीले कोने, त्रिकोण आकार की भूमि, शौचालय, मल, कूड़ेदान, राख, कोयला, ईंट, पत्थर, नुकसान, संभोग हेतु शयनकक्ष, टीले, जला हुआ स्थान आदि यह सब स्थितियां मंगल ग्रह की कारक हैं।

बुध (सौम्य) सूर्य के सबसे निकट ग्रह, जीवित प्राणियों पर आधिपत्य, उड़ने वाले पक्षी, वात पित्त और कफ तीनों त्रिदोष, त्वचा, नितम्ब, युवराज, बुद्धि संबंधी समस्याएं, त्वचा व स्नायु विकार, सूघंने की शक्ति, हरी मूंग, हरे वृक्ष, छोटे पौध , सब्जियां चौकोर आकार, पन्ना, बुद्धि और वाणी, ज्योतिष शास्त्र, हस्तरेखा शास्त्र, शिक्षा अध्यापन, अंकशास्त्र, ध ोखेबाजी या चालबाजी, चतुराई, क्षमता, अतिबुद्धिमता, शरद ऋतु, नपुसंकलिंग कारीगरों से संबंध, बहुगुणी स्वभाव, त्वचा, विनोद पूर्ण भाषा, वाणी विकार, आंतें, व्यापारी, मामा, रक्षस गुण, मंत्रों का उच्चारण आदि यह ज्योतिष आधार पर कारक स्थितियां हैं- वास्तु से बुध- उत्तर दिशा, अतिथि कक्ष, बैठक, सीढ़ी, लिफ्ट, दूरभाष, टेलीविजन, घरेलू दफ्तर, लेखा कार्य, क्रीड़ा स्थल, अहिंसात्मक खेल, ऐसी जगह जहां ये खेले जाते हैं। किताबें, बगीचे, मनोरंजन कक्ष, किताबों की आलमारी, अध्ययन कक्ष, पढ़ने की मेज, सभागार, बड़े शयनकक्ष, बड़े गलियारे, चित्रकारी, यह वास्तु समस्त स्थितियां बुध की हैं।

बृहस्पति (गुरू)-सौर मंडल का सबसे बड़ा ग्रह, जीवों पर आधिपत्य, जानवर और द्विपद, कफ, वसा, पैर, ईशान दिशा, सलाहकार, ब्राह्मण, नीला रंग, सूखे मेवे, फलदार पेड़, सुनने की शक्ति, सोना, पुखराज, मक्खन, घी, मलाई, भाग्य, अच्छी सलाह, शहद, जैतून का तेल, न्यायपालिका, अध्यापन, धार्मिक शिक्षा, विद्यालय, ऋण देने का कार्य, मीठी वस्तुएं, मानवीय दृष्टिकोण, मानवीयता, देवता, सरकार, ज्योतिषशास्त्र, भाषण द्वारा श्रोताओं को प्रसन्न करना, चरित्रहीनता, मोटापा, मधुमेह, आलसीपन, पाचनतंत्र की बीमारियां, साथियों से संबंध, आत्मविश्वास, जिगर, बड़ा भाई, पति, पैर, बांध, आदि गुरू ग्रह इनका कारक है। वास्तु में बृहस्पति ईशान दिशा, ब्रह्मस्थान, तिजोरी, पूजा कक्ष, ध्यान कक्ष, हवन, मंत्रों का उच्चारण, मुनि का घर, सजावट, धार्मिक चिन्ह, शिक्षकों, उपदेशकों, न्यायधीशों और धार्मिक नेताओं के निवास स्थान, पूजा और उपासना स्थल आदि।

शुक्र (भृगु):-भोर और संध्या का तारा, मूल द्विपदी जीव जैसे मनुष्य, वात व कफ, शुक्राणु व अंडाणु, जननेन्द्रिय और कामांग, सलाहकार बाह्मण, आग्नेय दिशा, ताकतवर प्रजनन अंगों और मूत्र मार्ग संबंधी विकार, जल तत्व, शारीरिक ठंडक, सुंदर कपड़े, चन्दन की लकड़ी, इत्र, सभी तरह की खुशबू, उपयुक्त साथियों से संबंध, प्यार और भागीदारी, गुप्त रोग,

फैशन डिजाइन, गाय, चांदी, हीरा, प्लेटिनम, स्त्री, अष्टकोणीय आकार, कलात्मक वस्तुएं, थकावट, मधुमेह, चेहरा, प्रजनन अंग, गहने, आभूषण, प्रेमलीला, प्यार और स्नेह, ललित कलायें, काव्य और चित्रकला आादि- **वास्तु में शुक्र**-आग्नेय दिशा, रसोई घर, शयनकक्ष, आरामकक्ष, भोजनकक्ष, संगीतकक्ष, रत्न, वाहन, घर में सार्वजनिक स्थान, पुराकालीन सुंदर चीजों से सजा कमरा, फूल, इत्र, घी, दही, अच्छा भोजन, स्वास्थ्य, सौन्दर्य प्रसाधन, गहने, धन, रत्न आदि।

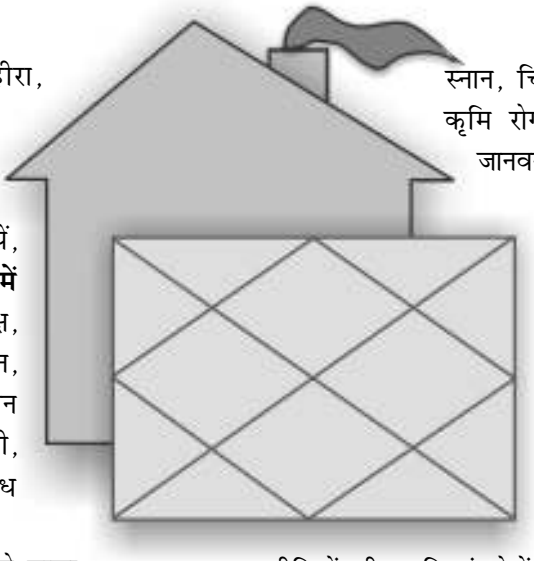

शनि (मंद):- नंगी आंखों से दिखने वाला आखिरी ग्रह, अजैव तत्वों पर आधिपत्य जैसे धातु, उड़ने वाले प्राणी जैसे पक्षी, नाड़ी ऊतक, नौकर शुद्र, फटे-पुराने कपड़े, काला रंग, पश्चिम दिशा, गठिया, जोड़ों का दर्द, पक्षाघात, लकवा, लंगड़ापन, वायु विकार, कपाय स्वाद, बैंगनी रंग, काले तिल, उड़द, भद्दे और बेकार पेड़, खमीरीकृत भोज्य पदार्थ, तला-भुना खाना, कसाई, शिल्पकार, नीची जाति के लोग, चमड़ा तेल, राख, लकड़ी, पैट्रोल, रूढ़िवादिता, शारीरिक थकान, नपुसंकलिंग, बूढ़े, बीमार लोग से संबंध, अकेलापन, त्याग, अनुशासन, जिम्मेदारी, मक्कार, घुटने, पिंडलियों की बीमारियां, गंदे बाल, मजदूर, काले अनाज। वास्तु में शनि-चार फलंकों वाली खिड़की, लोहा, खाने की चीजों को रखने का भंडार, बीम, लोहे की चीजें, ऊंची-नीची भूमि, त्यागे गए घर, खंडहर, भूमि के नीचे स्थित कोठरी, बजट धरती, चाहरदीवारी, दुर्गंधित स्थान, कोयला, नाला, कूड़ेदान, तलघर, दलदल, अंधेरे कमरे, गंदे कपड़े यह वास्तु समस्त स्थितियां हैं।

राहु (सर्प):-अजैव तत्व जैसे खनिज, कीट, रेंगने वाले प्राणी, नैऋत्य दिशा, महामारी, पागलपन, हिस्टीरिया, भूमि, शराब, विशाल जन संपर्क, भड़काने वाला स्वभाव, नाना-नानी, पलायनवृति, जुआ, धुंएदार रंग, विदेश यात्रा, अनहोनी, भ्रम, भ्रांति, वायु, विधवा, विधुर, राजसी स्तर, विष, सांप, तकनीकर अद्यमी, झूठ, असाध्य रोग, पुरानी बीमारी, हिचकी, डर, कुष्ठ रोग, रिसने वाला घाव, गाठें, सांप का काटना- **वास्तु में राहु**-बदबूदार स्नान, कूड़ेदान, गंदेपानी का नाला, शमशान घाट, टूटी-फूटी भूमि, पतली गली, ढाबा, खराब दीवारें, टूटी हुई चौखट, रंग या पेंट उखड़ना, विभिन्न प्रकार के पत्थर, लकड़ी के लट्ठे, कम रोशनी, नीची छतें, शस्त्र, फटे हुए बिस्तर, आदि।

केतू (शिखी):-अजैव तत्व जैसे खनिज, रंगने वाले और बहुपदी प्राणी जैसे कीड़े, पैर क्लोच्छ नैऋर्त्य / ईशान दिशा महामारी, हिस्टीरिया, विधवा, विधुर, नशीली चीजें, दादा-दादी, मूर्ति, भजन, आध्यात्मिक ज्ञान, हिंसात्मेकता, पवित्र नदियों में स्नान, चिकित्सक वायरल रोग, विस्फोटक, कृमि रोग, मानसिक असंतुलन, सींग वाले जानवर, भूमि या भाषा, लहसुनिया, फिरोजा, डंडे पर झण्डे का आकार, ज्ञान की लालसा, तपस्या भूख, मौन व्रत कट्टरता, उग्रस्वभाव, नपुसंकलिंग, कुत्ता, हिरन, मुर्गा, चोट शल्य चिकित्सा, कृमि रोग नासूर, मानसिक असंतुलन आदि यह कारक हैं केतू ग्रह के **वास्तु में केतू**-गलियां और सफाई व्यवस्था, गड्ढे नाला, कूड़ा करकट, गंदे पानी का नाला, स्नानघर, चीटियों की बालियां, बेलें, घास, पूजाकक्ष, छोटे और पिछवाड़े के दरवाजे, धुंआ भीड़े से भरी जगह, कुआं, नल आदि। यह वास्तु सम्मत स्थितियां हैं।

जब हम ज्योतिष शास्त्र का वास्तुशास्त्र के संदर्भ में अध्ययन करते हैं, खास तौर से आवासीय वास्तु शास्त्र के संदर्भ में तो कुंडली का चौथा भाव (जिसके बारे में आपको जानकारी दी गई है) लग्न यानि प्रथम भाव पर विशेष ध्यान देना चाहिए। चौथा भाव कुंडली में सामान्यत: उत्तर दिशा, मध्यरात्रि, कुंआ, पानी के पास स्थान, घर के सुख, माता, वाहन, गहरी नींद, मोक्ष, कृषि भावनाएं, दूध, भूमि जायदाद से संबंधित चौथा भाव कुंडली का है। पहला भाव पूर्व दिशा सूर्योदय, जन्मस्थान, नयी शुरूआतों और सामान्य जीवन से जुड़ी हुई सभी चीजों से संबंधित है। इसलिए उत्तर भारतीय वैदिक ज्योतिषशास्त्र पद्धति में चौथा और पहला भाव जो उत्तर और पूर्व दिशा से संबंधित है, को आवासीय वास्तु शास्त्र में सर्वश्रेष्ठ दिशाएं माना जाता है। वास्तु शास्त्र सभी शुभ कार्यों के लिए उत्तर और पूर्व दिशा के कथन पर बल देता है। सातवां भाव कुंडली का पश्चिम दिशा व मारक भाव है। यह दिशा अस्त होते हुए सूर्य की दिशा है। चारों ओर फैला अंधकार मृत्यु का प्रतीक है। दसवां भाव कुंडली का दक्षिण दिशा वह दिशा है, जहां सूर्य पूर्ण बली होता है। यहां सूर्य की तेज किरणें लोगों को शारीरिक कर्म करने के लिए प्रेरित करती हैं और इसलिए यह दिशा शारीरिक कामों और व्यवसाय के लिए उत्तम है। बाकी सभी भाव की दिशाओं के परस्पर मिलन बिंदुओं पर स्थित है। आवासीय वास्तु की गतिविधियां भावों के कारक तत्व के साथ मेल खाती है। मंगल भूमि संपत्ति घर का कारक है। शनि बंजर भूमि, खंडहर, पुराने घर का अधिपति है। शुक्र सुंदर भवनों का स्वामी है। सरकारी भवन सूर्य द्वारा शासित हैं।

इस प्रकार आप जान गए होंगे कि वास्तु का ज्योतिष से कितना गहरा संबंध है। ज्योतिष के बिना वास्तु नहीं है। यह दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। **ज्योतिष एवं वास्तु सम्बंधित जानकारी हेतू सम्पर्क करें- 0981003062** ❑

उत्तर-पश्चिम में घर के मुखिया का कमरा एक गंभीर वास्तु दोष

पिछले दिनों रेवाड़ी के श्री जयलाल जी के घर का वास्तु निरीक्षण किया गया। जब उन्होंने यह घर खरीदा था, तब उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थीं। जीवन में खुशहाली थी, परंतु इस घर में आने के बाद खर्चे बढ़ने लगे। घर में आपसी मतभेद भी रहने लगे। घर का निरीक्षण करने पर निम्नलिखित वास्तु दोष पाए गए।

- घर के दक्षिण, पश्चिम एवं पूर्व में सड़क थी। उत्तर दिशा बंद थी, जो कि कुबेर का स्थान है और धन आगमन की दिशा है।
- उत्तर-पूर्व दिशा में सीढ़ियां थीं जिनके नीचे शौचालय बना हुआ था। यह एक गंभीर वास्तु दोष था जो परिवार की उन्नति में रुकावट व घर में मानसिक तनाव का सबसे बड़ा कारण था।
- दक्षिण-पूर्व, पूर्व में भी सीढ़ियां थीं जिनके नीचे स्टोर था।सीढ़ियों के नीचे का स्थान बंद होने से परिवार की उन्नति में हर तरफ से रुकावट आती है तथा स्त्रियों का स्वास्थ्य खराब रहता है।
- पश्चिम में स्थित रसोई घर में गैस स्टोव दक्षिण-पश्चिम में रखा था और सिंक दक्षिण-पूर्व में था। दोनों एक ही लाइन में थे।
- दक्षिण-पश्चिम में शौचालय था। घर के इस भाग में शौचालय का होना एक गंभीर वास्तु दोष है जो घर के मुखिया की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों एवं धन हानि का कारण होता है।
- घर का मुख्य द्वार और पिछला द्वार एक ही सीध में थे।
- घर के मुखिया का कमरा उत्तर-पश्चिम में था, यह भी एक गंभीर वास्तु दोष है जिसके कारण घर के मुखिया को अक्सर घर से बाहर ही रहना पड़ता है।

उपर्युक्त दोषों के विश्लेषण के बाद उन्हें दूर करने के निम्नलिखित उपाय बताए गए:

- उत्तर दिशा में बने स्वागत कक्ष में उत्तर की दीवार पर पानी के झरने की फोटो लगवाई जाए।
- उत्तर-पूर्व, पूर्व में बनी सीढ़ियां हटाई जाएं और शौचालय एवं पिछले दरवाजे को स्थानांतरित किया जाए जिससे शौचालय भी पूर्व में हो जाए और द्वारों के आमने-सामने होने का दोष भी दूर हो जाए।
- दक्षिण-पूर्व, पूर्व में बनी सीढ़ियों के नीचे बने स्टोर को हटवाया जाए और सीढ़ियों के नीचे का हिस्सा खुला रखा जाए।
- रसोईघर में गैस को दक्षिण-पूर्व की तरफ रखा जाए ताकि खाना बनाते समय गृहिणी का मुख पूर्व की तरफ हो। सिंक उत्तर की तरफ रखा जाए।
- दक्षिण का कमरा मुखिया का शयन कक्ष हो और उत्तर-पश्चिम के कमरे को कार्य-कक्ष बनाया जाए ताकि उनका सामान जल्दी से बिक सके।
- स्टोर को स्थानांतरित किया जाए।

इस प्रकार, उपर्युक्त सभी उपाय करने पर श्री जयलाल जी की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार आया। **वास्तु सम्बंधित जानकारी हेतू सम्पर्क करें-0981003062** ❑

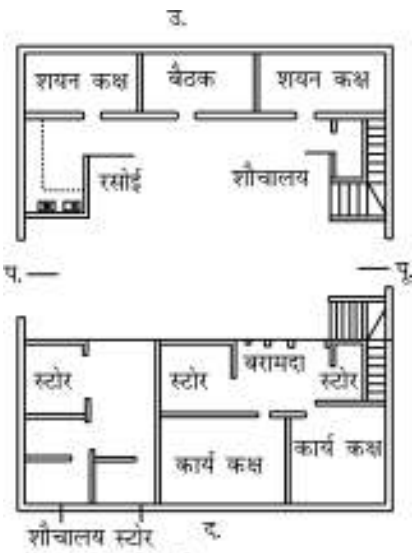

दोषमुक्त

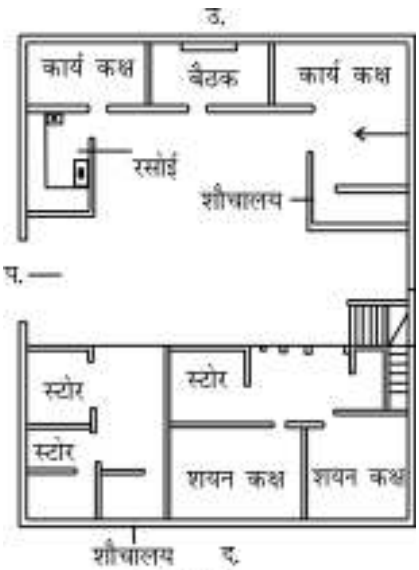

दोषमुक्त

वास्तु ऊर्जा: एक नजर में

हमारा जीवन वास्तु ऊर्जा से संचालित व प्रवाहित होता है। वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों का मुख्य उद्देश्य जीवन में, स्थान में, हर जगह वास्तु ऊर्जा के प्रवाह को अबाध गति से प्रवाहित व संचालित करना है। अगर जिस जगह, घर या बाहर- वास्तु ऊर्जा का प्रवाह बाधित हो रहा हो, वहां व्यक्ति, परिवार स्वस्थ नहीं रह सकता। दरिद्रता, बीमारी, गृह-क्लेश, अस्वस्थता, आदि का एक ही मूल कारण है- वास्तु ऊर्जा का प्रवाह बाधित होना।

यहां हम कुछ महत्वपूर्ण टिप्स दे रहे हैं, जिन्हें अपनाकर आप अपने घर या बाहर, सब जगह वास्तु ऊर्जा का बेरोक-टोक प्रवाह जारी रखकर जीवन को सुखी व निरोगी बना सकते हैं:

- योग के अभ्यास से देह में कृशता आती है। देह की स्थूलता व बेढंगापन दूर होकर शरीर सुन्दर व सुडौल बनता है। चेहरे पर हर समय चमक रहती है।
- घर के मध्य में ब्रह्म स्थान होता है। उसे खुला व साफ-सुथरा रखें। यहां से पूरे घर को ऊर्जा मिलती है।
- दक्षिण दिशा हल्की व खाली होने पर घर में ऊर्जा का संतुलन बिगड़ता है। ऊर्जा-संतुलन बनाए रखने के लिए बेड(पलंग) का सिरहाना दक्षिण दिशा की ओर दीवार से सटाकर कर रखें।
- आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) में रसोई होने से पूरे घर में ऊर्जा पर्याप्त मात्रा में प्रवाहित होती है। ऊर्जा का संतुलन व संरक्षण भी होता है।
- घर का ईशान कोण (पूर्वोत्तर) वास्तु ऊर्जा का सर्वोत्तम स्थल है। यहां से प्रवाहित होने वाली जैव-विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा पूरे घर को ऊर्जामय बनाती रहती है। इसलिए इस स्थान को खुला, साफ व पवित्र बनाए रखना चाहिए।
- शौचालय, किचन और पूजा-ग्रह एक दूसरे के समीप नहीं रखें, क्योंकि इससे नकारात्मक ऊर्जा मिलती है।
- भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में रखें। इससे ऊर्जा के साथ-साथ शांति व सुकून भी प्राप्त होता है।
- घर में उत्तर में अधिक तथा अंदर की ओर खुलने वाली खिड़कियों का निर्माण करवाया जाना चाहिए, क्योंकि इससे ऊर्जा ज्यादा मात्रा में प्राप्त होती है। घर-परिवार में धन-धान्य की वृद्धि होती है।
- सकारात्मक ऊर्जा के लिए घर का धरातल ईशान कोण की ओर ढलवा रखना चाहिए। जल का बहाव भी इन्हीं दिशाओं में रखें।
- यह सुनिश्चित करें कि आपका घर ऐसा हो, जहां सूर्य का प्रकाश व हवा ज्यादा मात्रा में प्रवेश कर सकें।
- ईशान कोण में पीने का पानी उपलब्ध रहने से पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा मिलती है।
- गृह में पर्याप्त व उत्तम वास्तु ऊर्जा के विचरण व संरक्षण हेतु शौचालय दक्षिण, आग्नेय (दक्षिण-पूर्व), पश्चिम या वायव्य कोण में ही बनवाना चाहिए।
- स्नान घर पूर्व या उत्तर में स्थित होने पर घर में ऊर्जा की कमी नहीं होती।
- सकारात्मक ऊर्जा के लिए मकान चौरस, लम्बाई-चौड़ाई समान यानी वर्गाकार या फिर चौड़ाई से लंबाई प्राय: दुगनी होनी चाहिए।
- घर में सामान बिखरा कर नहीं रखना चाहिए। झाड़ू को उचित स्थान पर लेटाकर रखना चाहिए। इससे ऊर्जा प्रवाह बाधित नहीं होता।
- कभी भी किसी की ओर उंगली से इशारा न करें, क्योंकि इससे आपकी ओर नकारात्मक ऊर्जा का विचरण होता है।
- पार्टी या फंक्शन में बचा खाना खाने से गरीबी आती है। भाग्य प्रतिकूल होता है।
- टूटी-फूटी क्राकरी में सामान परोसने से नकारात्मक ऊर्जा विचरण करती है। यह आपके आत्म विश्वास को कमजोर करती है।
- अतिथियों को चाय या पानी सर्व करते समय केतली या जग का मुंह अतिथियों की ओर नहीं करें। इससे उत्पन्न नकारात्मक ऊर्जा मेहमान को नाराज कर सकती है।
- खाना खाकर जूठे बर्तन शयन-कक्ष में न छोड़ें, क्योंकि इससे ऊर्जा दुष्प्रभावित होती है। परिवार में बीमारी, मायूसी बढ़ती है।
- मकान की छत पर फालतू सामान भूलकर भी न रखें। घर में आर्थिक विपन्नता के साथ-साथ कलह पैदा होती है, क्योंकि छत पर बिखरा सामान सकारात्मक ऊर्जा में बाधक होता है।
- घर के मुख्य द्वार पर बिजली का मीटर न लगवाएं।
- सीढ़ियों के नीचे शौचालय, बाथरूम, मीटर, मोटर आदि न लगवाएं, क्योंकि इससे ऊर्जा संतुलन बिगड़ता है। नकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह से घर की शांति नष्ट होती है।
- शराब पीते समय आखिरी जाम से जाम टकराना न भूलें। यह आपके लिए शुभ है।
- बेडरूम में सुन्दर नयनाभिराम पर्वत-श्रृंखलाओं की तस्वीर, बर्फ से ढके पहाड़, चित्र जीवन में स्थिरता लाते हैं। वैवाहिक-दाम्पत्य जीवन सुदृढ़ होता है।
- मकान में पानी की टंकी को उत्तर-पश्चिम कोण में छत पर रखें। इससे ऊर्जा का संतुलन बना रहता है। ध्यान रखें कि जहां टंकी रखी गई हो, उसकी ऊंचाई दक्षिणी व पश्चिमी दीवार से कम न हो।
- संगीत का सामान-वाद्ययंत्र फर्श पर रखने से ऊर्जा-संतुलन बिगड़ता है।
- दक्षिण दिशा में जल नहीं रखना चाहिए। ना ही बर्तन या कपड़े इस दिशा में धोना चाहिए। इससे नकारात्मक ऊर्जा पैदा होगी व ऊर्जा का संतुलन असमान होगा।
- बांस के तने, बांसुरी छत के बीम की नकारात्मक ऊर्जा के दुष्प्रभाव को रोकने में कारगर हैं। बांसुरी शांति व समृद्धि का प्रतीक है।
- डायनिंग हॉल में दर्पण लगाना शुभ है। ऐसा करने से पर्याप्त सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। **बिना तोड़-फोड़ के वास्तु दोष मुक्त होने के लिए आप हमें संपर्क करें:फोन:09810003062** ●

वास्तु से करें लक्ष्मी प्रवेश

भवन इमारत या आवास के निर्माण से पहले, वास्तु से संबंधित कुछ विशेष रहस्यों का ध्यान रखना, उन पर अमल करना आवश्यक है। यह रहस्य ही धन लक्ष्मी के प्रवेश को आसान बनाते हैं। वह रहस्य ही जैसे नींव आदि के प्लान तैयार करने से पहले भूखण्ड के चारों ओर की भूमि को समतल कर लेना, भूमि का समतलीकरण करके कटाई-भराई के कार्य को यथाशीघ्र निपटा लेना आदि।

किसी भी भवन, इमारत या आवास के निर्माण से पहले, वास्तु से संबंधित कुछ विशेष रहस्यों का ध्यान रखना, उन पर अमल करना आवश्यक है। यह रहस्य ही धन लक्ष्मी के प्रवेश को आसान बनाते हैं। वह रहस्य ही जैसे नींव आदि के प्लान तैयार करने से पहले भूखण्ड के चारों ओर की भूमि को समतल कर लेना, भूमि का समतलीकरण करके कटाई-भराई के कार्य को यथाशीघ्र निपटा लेना आदि।

अब सबसे पहले मुख्य द्वार की बात पर आते हैं। यह सर्वविदित है कि प्रत्येक भूखण्ड में वास्तु देव का वास है, और वास्तु देव में विभिन्न देवताओं का स्थापत्य है, जो उचित स्थान पर आसन ग्रहण कर आशीर्वाद रूपी शुभ प्रभाव डालते हैं। मुख्य द्वार का वास्तु भवन निर्माण में विशेष स्थान है इस लिए इन तथ्यों को वरिष्ठता देना बहुत आवश्यक है।

कुछ द्वार स्थापित करने के विभिन्न मत वास्तु में प्रचलित हैं।

(1) नवग्रह विधि (2) देव विधि (बोधचक्रम) (3) चुम्बकीय क्षेत्र-पंच तत्व-आधारित विधि।

नवग्रह विधि- प्रत्येक भूखण्ड की प्रत्येक दिशा में नौ ग्रहों के विशिष्ट स्थान हैं। इसी क्रम संख्या के अनुसार प्रत्येक ग्रह भूखण्ड ही चारों दिशाओं में स्थापित हैं।

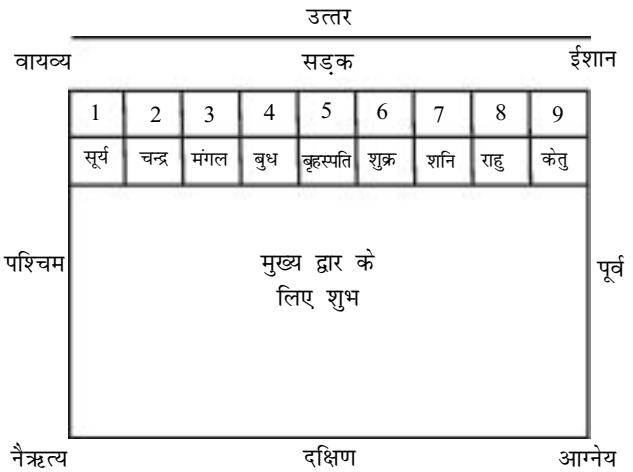

मुख्य द्वार नवग्रह विधि के अनुसार-

उपरोक्त चित्र में भूखण्ड के उत्तरी दिशा में प्रत्येक ग्रह का स्थान दर्शाया गया है। प्रथम भाग सूर्य, द्वितीय चन्द्र, तृतीय मंगल, चतुर्थ बुध, पंचम गुरू, षष्ठ भाव शुक्र, सप्तम शनि, अष्टम राहु, नवम केतु के लिए है। जिस ग्रह के क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाया जाए, उस क्षेत्र का ग्रह, भवन में रहने वाले पर अपने स्वभाव के अनुरूप विशेष शुभ-अशुभ प्रभाव डालता है। जैसे-

- सूर्य क्षेत्र में मुख्य द्वार होने से भवन को क्षति पहुंचने का खतरा बना रहता है।
- चन्द्र क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाने से भू-स्वामी को नुकसान पहुंचता है।
- मंगल क्षेत्र में मुख्य द्वार होने से भू-स्वामी की शत्रुता बढ़ती है और शत्रुओं से कष्ट पहुंचता है।
- बुध क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाने से सुख-समृद्धि बढ़ती है। लक्ष्मी प्रवेश का मार्ग प्रशस्त होता है।
- गुरू क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाने से धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है, लक्ष्मी विद्यमान रहती है।
- शुक्र क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाने से सुख-सम्पत्ति अर्जित होती है, धन वृद्धि होती है।
- शनि क्षेत्र में मुख्य द्वार होने से नाना प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं तथा बनते काम बिगड़ते हैं।
- राहु क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाने से जीवन और कार्य क्षेत्र में असफलताएं मिलती हैं।
- केतु क्षेत्र में मुख्य द्वार होने से कष्ट एवं अनिश्चितताएं बनी रहती हैं।

यदि इस वास्तु सिद्धान्त से भवन में मुख्य द्वार बुध, गुरू या शुक्र स्थान से निकल जाए तो यह सुख समृद्धि का कारक होता है।

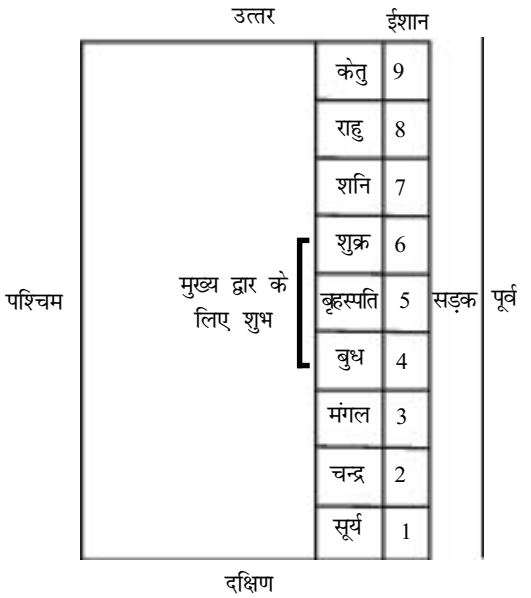

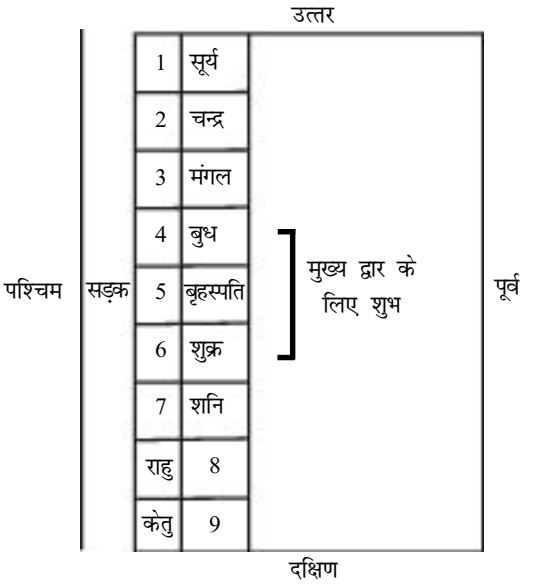

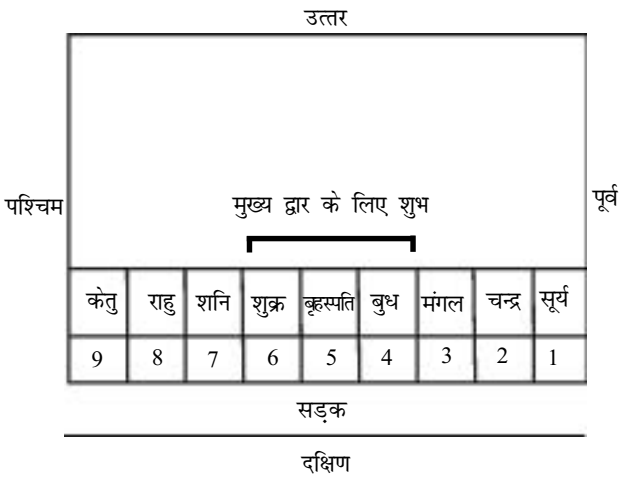

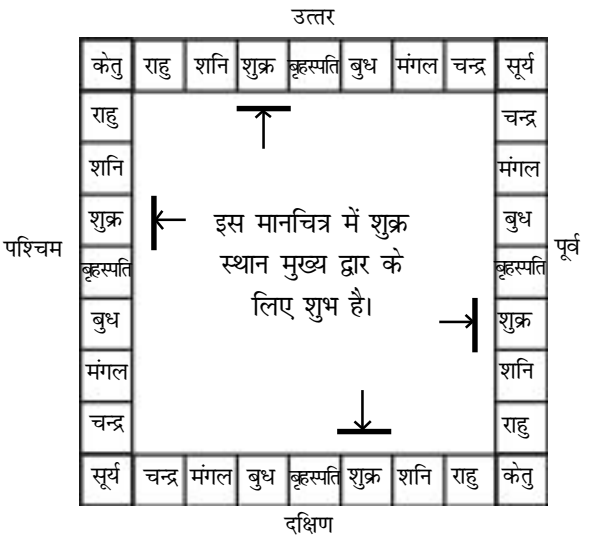

देवविधि (बोधचक्रम):-

वास्तु के अनुसार भूखण्ड भवन के चारों ओर 32 देवताओं का वास है। प्रत्येक दिशा में आठ देवता वास करते हैं जो इस प्रकार है-शिरवी, पर्जन्य, जयंत, इन्द्र, सूर्य, सत्य, मृश, आकाश, वायु, पूषा, वितथ, ब्रहत्त, यम, गन्धर्व, भृंगराज, मृग, पित्त, दौवारिक, सुग्रीव, पुष्पदंत, वरूण, असुर, शीण, पापयक्ष्मा, रोगहर, अहि, मुख्य, मल्लाह, सोम, भुजंग, अदिति, दिति इन देवताओं के नाम के बारे में पहले भी जिक्र कर चुके हैं।

अतः शुभ परिणाम के लिए पूर्व

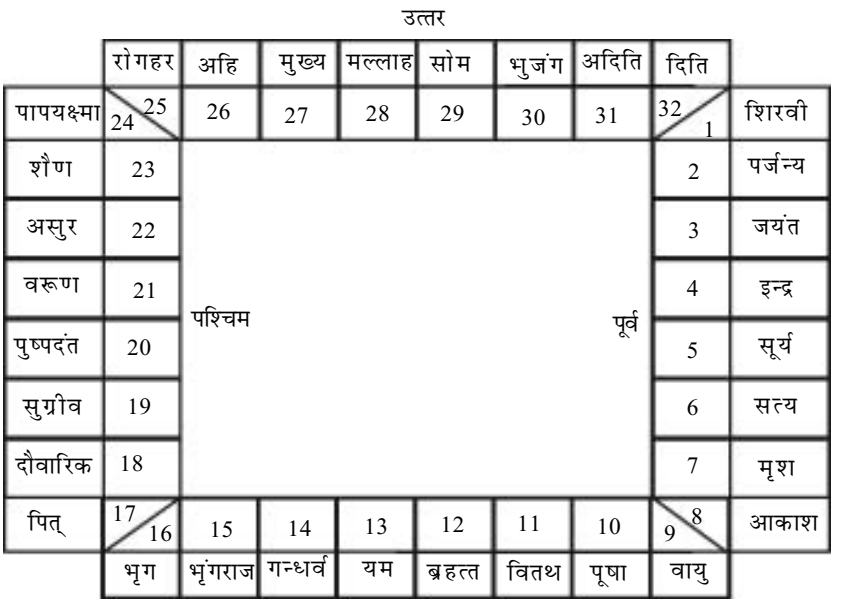

बोध चक्र के अनुसार मुख्य द्वार स्थापना निम्न चित्र में दर्शाया गया है-

पूर्व दिशा	1 शिरवी	2 पर्जन्य	3 जयंत	4 इन्द्र	5 सूर्य	6 सत्य	7 मृश	8 आकाश
	अग्निमेय	स्त्रीलाभ	बहुधन	राजप्रियता	क्रोध	असत्यता	क्रूरता	चोरी
दक्षिण दिशा	9 वायु	10 पूषा	11 वितथ	12 ब्रहत्त	13 यम	14 गन्धर्व	15 भृंगराज	16 मृग
	असपापतत्व	सेवकाई	नीचत्व	संतति	शूद्रकर्म	औतधनता	निर्धनता	वीर्यनाशा
पश्चिम दिशा	17 पित्त	18दौवारिक	19 सुग्रीव	20 पुष्पदंत	21 वरूण	22 असुर	23 शीण	24 पापयक्ष्मा
	स्वलपायु	व्यय	धननाशा	धनवृद्धि	भोग	राजमय	अतिरोग	पापसंचय
उत्तर दिशा	25 रोगहर	26 अहि	27 मुख्य	28 मल्लाह	29 सोम	30 भुजंग	31 अदिति	32 दिति
	दधबंध	शत्रुभय	पुत्रलाभ	लक्ष्मी	धर्मशील	बहुपैर	स्त्रीदोष	धननाशा

शत्रुभय

दिशा में 3 जयंत, बहुधन या (4) इन्द्र (राजप्रियता) में से किसी एक क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाएं। पश्चिम दिशा में (208) पुष्पदंत (धनवृद्धि) क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाएं। उत्तर दिशा में (27) मुख्य (पुत्र लाभ) या 28 मल्लाह (लक्ष्मी) क्षेत्र या (29) सोम (धर्मशीलता) क्षेत्र में मुख्य द्वार बनाएं।

चुम्बकीय क्षेत्रः- मुख्य द्वार बनाने के लिए चुम्बकीय क्षेत्र पंच तत्व-आधारित इस प्रकार है जिस दिशा में भवन का द्वार बनाना हो, उस दिशा को नौ से विभाजित कर दें। फिर दायें से 5 (पांच) भाग और बाएं से 3 (तीन) भाग छोड़कर शेष भाग यानि चौथे भाव में मुख्य द्वार बनाएं।

उदाहरण के तौर पर- भूखण्ड जिसकी चौड़ाई 31.5 फुट है, आप इसके उत्तर दिशा में मुख्य द्वार निकालना चाहते हैं तो सर्वप्रथम 31.5 को 9 से विभाजित कर दें। 31.5/9=3.5 फुट

अब दायें से पांच 5X3.5=17.5 फुट और बाएं से तीन 3X3.5=10.5 फुट जगह छोड़ दें फिर मुख्य द्वार 3.5 फुट क्षेत्र में चौथे स्थान पर बनाएं।

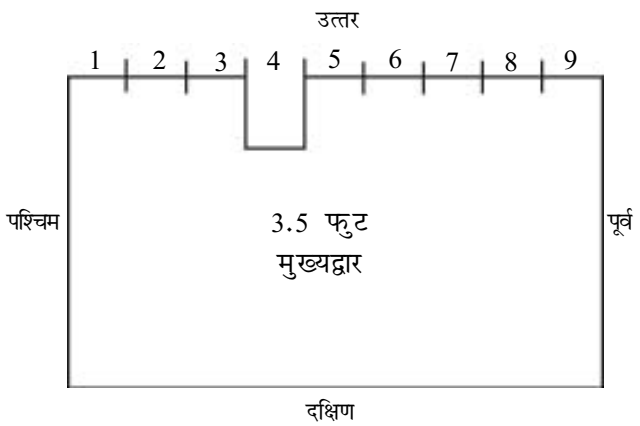

प्रश्न उठता है कि भवन का दांया और बांया भाग किस तरह से मानें? जब हम भवन से बाहर निकलते हैं, तो जो हमारा दांया भाग होगा, वही भवन का दांया और जो हमारा बांया भाग होगा, वही भवन का बांया भाग होगा।

पूर्व दिशा में तीसरे और चौथे भाग में दक्षिण दिशा में चौथे एवं छठे भाग में पश्चिम दिशा में चौथे व पांचवे भाग में तथा उत्तर दिशा में चौथे और पांचवे भाग में से किसी भी क्षेत्र में द्वार बनाना शुभ होता है।

मुख्य द्वार बनवाते समय कुछ अन्य बातें ध्यान रखनी चाहिए-

(1) मुख्य द्वार 1: 2 अनुपात में हो यानि इसकी लम्बाई इसकी चौड़ाई से दुगुनी होनी चाहिए। वर्गाकार या अनियमितकार द्वार अशुभ होते हैं।

(2) मुख्य द्वार चार फुट चौड़ा है तो उत्तम है।

(3) यदि घर के सभी द्वार एक किवाड़ के हो तो मुख्य द्वार दो किवाड़ों का होना उत्तम है।

(4) मुख्य द्वार की लकड़ी नई और उत्तम क्वालिटी की होनी चाहिए। पुरानी लकड़ी इस्तेमाल न करें।

(5) मुख्य द्वार ऑटोमेटिक अर्थात् स्वतः खुलने या बन्द करने वाला न हो।

(6) मुख्य द्वार अन्दर की ओर बाएं हाथ की तरफ खुलना चाहिए।

(7) द्वार की चौखटें मुख्य द्वार से लगती हुई न हों। दीवार और द्वार की चौखट के बीच कम से कम चार इंच का अंतर हो। सभी मुख्य द्वारों पर दहलीज होनी चाहिए। यदि दहलीज पर सीढ़ियां हैं तो 5, 11, 22, की संख्या में हो यानि चार से विभाजित करने पर हमेशा 2 बचे।

यदि दो द्वार लगवाने है तो निम्न प्रकार से लगायें

❖ घर का मुख्य द्वार पश्चिम मे हो तो पूर्व दिशा में सहायक द्वार लगाना चाहिए।

❖ यदि दक्षिण में मुख्य द्वार हो तो उत्तर में सहायक द्वार लगवाना चाहिए। इन दोनों स्थितियों में घर में निवास करने वालों की गति पूर्व मुखी, एवं उत्तरमुखी रहेगी।

❖ यदि उत्तर में मुख्य द्वार हो तो पूर्व में सहायक द्वार लगाना चाहिए।

❖ यदि पूर्व में मुख्य द्वार हो तो उत्तर में सहायक द्वार लगाना चाहिए।

❖ यदि पूर्व में मुख्य द्वार हो तो दक्षिण या पश्चिम में भी सहायक द्वार लगा सकते हैं।

यदि भवन में तीन द्वार लगाने हो तो

❖ दक्षिण को छोड़कर बाकी तीन दिशाओं पूर्व, पश्चिम, और उत्तर दिशा में द्वार बनाएं।

❖ उत्तर, पूर्व, और दक्षिण में भी द्वार शुभ होंगे।

❖ उत्तर को छोड़कर शेष तीन दिशाओं में द्वार बनवाना शुभ नहीं होता।

❖ नैऋत्य दिशा के कमरे में तीन द्वार न बनाएं।

यदि भवन में चारों दिशाऐं हों तो चारों दिशाओं में द्वार रख सकते हैं। शुभ होगा। मगर इस बात का ध्यान रखें कि नैऋत्य दिशा के कमरे में चार द्वार बिल्कुल न लगाएं।

❖ चाहरदीवारी चारों दिशाओं में एक जैसी मोटी और एक जैसी ऊंचाई की हो।

❖ चाहरदीवारी दक्षिण और पश्चिम दिशा में अधिक मोटी एवं ऊंची होनी चाहिए।

❖ वैज्ञानिकों का मत है कि पूर्व और उत्तर की चाहरदीवारी पतली एवं नीची होने से सूर्य की विटामिन 'डी' तथा अन्य गुणों से भरपूर पराबैंगनी किरणें भवन निवासियों पर बिना रूकावट के पड़ती रहेंगी।

❖ दक्षिण दिशा में अधिक मोटी दीवारें दोपहर बाद के सूर्य की पड़ने वाली इन्फ्रारेड किरणों से हमारा बचाव करेंगी।

इसके साथ ही आपको भवन निर्माण में चाहरदीवारी के कोनों के बारे में भी जानकारी देंगे। चाहरदीवारी के कोनों को बन्द करने के परिणाम अच्छे नहीं होते।

भवन निर्माण में गैरेज या नौकरों के आवास ग्रहों या अतिथि ग्रह आदि के निर्माण हेतु प्राय: भूखण्ड के कोनो को ही सुनिश्चित किये जाने का रिवाज रहा है। यदि भवन चारों ओर से खुला हो तो वह ब्रह्म स्थल अर्थात् हर प्रकार से मंगलमय होता है।

इसी प्रकार किसी भी भूखंड के चारों कोनों में देवताओं का वास होता है। अत: यदि हम कोई भी कोना निर्माण करते समय बन्द कर देते हैं, तो उस कोने के अधिपति देवता के शुभ आशीर्वाद से वंचित रह जाते हैं। इस कारण हमें इसके बुरे परिणाम भोगने पड़ सकते हैं। इसके विभिन्न परिणाम निम्नलिखित हैं-

ईशान कोण

ईशान कोण में सर्वशक्तिमान परमेश्वर का स्थान है, इसलिए इस कोण में कोई निर्माण न करके खाली छोड़ने का प्रावधान है। चाहरदीवारी के इस कोने का निर्माण हेतु बन्द करने से या कोने में भारी सामान रखने के भयंकर दुष्परिणाम हो सकते हैं, जो ग्रहस्वामी के लिए अति अशुभ होंगे। अत: इस कोने को हमेशा खाली और स्वच्छ रखें।

वायव्य कोण

वायव्य कोण के अधिपति देवता वायुदेव हैं। इस कोण को बंद करने से धन आगमन के साधन सूख जाते हैं। कारखानों में वायव्य कोण बन्द होने से दुर्घटनाएं बढ़ सकती हैं। उसके मालिक दिवालिया तक हो सकते हैं। यदि गैराज आदि या पशुओं के लिए स्थान या अतिथिग्रह बनाना हो तो इसे बाहरी दीवार से छूता न बनवाएं।

आग्नेय कोण

आग्नेय कोण के अधिपति अग्निदेव हैं। आग्नेय कोण बंद करने से अग्नि या बिजली-करंट से दुर्घटना का भय निरंतर बना रहता है। ग्रह स्वामी के विकास मार्ग में निरंतर अवरोध व अड़चनें आती रहती हैं। इस कोण में गैरज, नौकर का कमरा बनवाते समय ध्यान रखें कि यह पूर्वी-दक्षिणी दीवार को न छुए।

नैऋत्य कोण

नैऋत्य कोण ऐसा कोण है जिसे बंद कर देना शुभ होता है। नैऋत्य क्षेत्र को वजन से जितना दबाया जाए उतना ही अच्छा होता है। इस कोण में वजनी सामान की कोठरी, सीढ़ी बनवाना ठीक है।

इस प्रकार इन सभी स्थितियों को जांच परख करते हुए वास्तु सम्मत बनाने का प्रयत्न करें, ताकि सुख-समृद्धि, शान्ति, स्वास्थ्य लाभ व पारिवारिक सदस्यों में आपसी प्रेम सौहार्द बना रहे। **वास्तु संबंधित जानकारी हेतू सम्पर्क करें- 9810003062** ❑

VASTU CONSULTANT

	Delhi	Out Station
Layout and Designing Your New factory :	Rs. 35,000/-	35,000/-
layout and Designing your new house :	Rs. 20,000/-	25,000/-
Rectification in your factory (already build) :	Rs. 20,000/-,	25,000/-
Rectification in your house (already build) :	Rs. 5,000/-	20,000/-
Suggestion on your layout :	Rs. 3,100/- -By Post	

Contact: Vastu Evam Jyotish. Tel : 9810003062

Facility available for outstation also at extra travelling charges

साज-सज्जा के 48 सौभाग्यशाली टिप्स

वास्तु और फेंगशुई के सिद्धान्तों के अनुसार अपने मकान को सजाएं-संवारे। यकीन करें! ऐसा करने से आपका मकान सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तरक्की करेंगे। फेंगशुई में मकान की आंतरिक साज-सज्जा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जैसे- कोई भी कार्य करने के तरीके होते हैं, एक नियम व पाबंदियां होती हैं, उसी प्रकार मकान को संचालित करने के भी तरीके बनाए जाते हैं। ये तरीके ऐसे हैं, जो आपकी लाइफ स्टाइल को भी अनुशासित करते हैं।

भवन निर्माण के बाद व्यक्ति की खुशियां बढ़ जाती हैं। ग्रह स्वामी की यही कामना होती है कि जिस सुख-सुविधा व सुकून के लिए उसने मकान बनवाया है, उसमें रहते हुए वह जीवन में तरक्की करके अपना हर सपना पूरा कर सके। उसकी खुशियां दुगुनी हो सकती हैं, अगर वह वास्तु और फेंगसुई के सिद्धान्तों के अनुसार अपने मकान को सजाएं-संवारे। यकीन करें! ऐसा करने से आपका मकान सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तरक्की करेंगे। फेंगसुई में मकान की आंतरिक साज-सज्जा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जैसे- कोई भी कार्य करने के तरीके होते हैं, एक नियम व पाबंदियां होती हैं, उसी प्रकार मकान को संचालित करने के भी तरीके बनाए जाते हैं। ये तरीके ऐसे हैं, जो आपकी लाइफ स्टाइल को भी अनुशासित करते हैं। फेंगसुई में ग्रह स्वामी का कक्ष, परिवार के दूसरे सदस्यों का कक्ष, किचन, बाथरूम व दूसरे कक्षों की उपस्थिति तथा उन्हें सौभाग्यशाली बनाने के तरीके ठीक इसी प्रकार हैं कि उनका प्रभाव पारिवारिक सदस्यों की दिनचर्या व अनुशासन पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। आप और आपका परिवार फेंगसुई को भवन निर्माण एवं साज-सज्जा का आधार बनाकर जीवन में शांति, संपन्नता तथा सफलता प्राप्त कर सकता है। एक आदर्श घर सभी प्रकार से फेंगसुई पर आधारित होता है। कौन सा कक्ष कैसी उर्जा का संचरण करता है, उसकी साज-सजावट कैसी होनी चाहिए, व्यक्ति के उठने-बैठने व वार्तालाप किस प्रकार का होना चाहिए, आदि उर्जा को समुचित रूप से संचरण करने में योग दान देते हैं। यदि शयनकक्ष की साज-सज्जा फेंगसुई पर आधारित हो, तो आप सुखद नींद, तृप्त यौन संबंध एवं अपूर्व शक्ति का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। डायनिंग रूम वह कक्ष होता है जिसकी साज-सज्जा फेंगसुई से हो, तो आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है, व्यापारिक संबंधों में तीव्रता आती है तथा दूसरों से आपके संबंध प्रगाढ़ होते हैं। उसी प्रकार जहां स्नान घर की साज-सज्जा धन के अपव्यय को रोकती है। वहीं लाउंज की सजावट से पारिवारिक सदस्यों से संबंध दृढ़ होते हैं। रसोई घर वह कक्ष होता है, जिसकी सजावट फेंगसुई के अनुकुल हो, तो आप शारीरिक व आर्थिक दोनों प्रकार के लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यहां कुछ ऐसे महत्वपूर्ण टिप्स दिये जा रहे हैं, जिनका अनुपालन-अनुसरण करके आप सदा सुखी व खुशहाल रहेंगे :

(1) अगर नींद पूरी न हो, तो सारा दिन आलस्य व अकर्मण्यता से बीत जाता है। हर क्षण दिमाग पर एक बोझ बना रहता है। कई लोगों को अनिद्रा का रोग होता है, ऐसे लोगों का जीवन कष्ट में बीतता है। इस रोग से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति दवा-दारू का सेवन व हकीमों तथा तांत्रिकों के चक्कर काटता है, फिर भी वही ढाक के तीन पात वाली बात ही सामने आती है। अनिद्रा से पीड़ित व्यक्तियों के लिए फेंगसुई सहज व सरल समाधान प्रस्तुत करता है। ऐसे लोगों को अपना बिस्तर उत्तर दिशा में लगाना चाहिए, क्योंकि यह दिशा शांति का प्रतीक होने के कारण नींद लाने में

सहायक है। दूसरे उपायों में दक्षिण दिशा का कम से कम प्रयोग किया जाए, अथवा इस दिशा में काले रंग का प्रयोग किया जाना चाहिए। सोने के कमरे में ज्यादा से ज्यादा अंधेरा रखें। यौन शक्ति का ज्यादा सा ज्यादा प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है। कमरे में उजाले के लिए डिम लाइट अथवा मध्यम रोशनी का प्रयोग करें।

(2) फेंगसुई में घरों की सजावट ऐसी होनी चाहिए, ताकि उर्जा का संतुलन रखा जा सके। ज्यादा उर्जा भी नुकसान देती है, वहीं कम उर्जा से भी मुसीबतें आती हैं। यिन व यांग ऊर्जा का काफी महत्व है। लाइंज की सजावट करते समय हमेशा ध्यान रखें कि वहां हल्के व नरम रंगों की ज्यादा से ज्यादा नुमाईश हो सके। हल्के रंग को शांति का प्रतीक माना जाता है। यदि इसके विपरीत गहरे लाल या गहरे नीले रंगों का प्रयोग किया जाता है, तो यह पारिवारिक सदस्यों के लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है। अगर आपकी हाल में ही शादी हुई है, तो अपने शयनकक्ष में गहरे रंग का प्रयोग कर सकते हैं।

(3) डायनिंग रूम में मेज की बनावट साधारण रखें। आपकी खाने की मेज आयताकार, गोलाकार, चतुर्भुज अथवा आवेल आकार की हो सकती है। इसका आकार भोजन कक्ष में अनुपातिक रूप से सही होना चाहिए। हमेशा संतुलन बनाएं रखने पर जोर दें। डायनिंग टेबल लकड़ी की बनी होनी चाहिए। यह यिन ऊर्जा को संचालित करती है। खाने की मेज को उत्तर दिशा में लगायें। मेहमान को हमेशा मेज पर ऐसी स्थिति में बैठाएं ताकि वह वहां से डायनिंग रूम का द्वार देख सकें। ग्रहस्वामी भी ऐसी स्थिति में बैठें, तो ज्यादा शुभ रहता है।

(4) शहर में स्थानाभाव के कारण लोग किचन में डायनिंग रूम की ओर ऐसी खिड़की बना देते हैं, जिसमें से सीधे हॉल या कमरे में परोसा जाता है। इन खिड़कियों के इस्तेमाल में एक सावधानी रखना अत्यन्त आवश्यक है। जब इन खिड़कियों का प्रयोग न किया जा रहा हो, तो उन्हें बंद कर दें। ऐसा करने से प्रत्येक कमरे में 'ची' ऊर्जा का प्रवाह संतुलित रूप से बना रहेगा। खिड़कियों का प्रयोग न किये जाने पर यदि उन्हें बंद रखने की व्यवस्था न हो, तो इन पर गमला रखकर ऊर्जा का संतुलन बरकरार रखा जा सकता है।

(5) रसोईघर, घर के सभी कमरों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अत: किचन को हमेशा साफ-सुथरा तथा किचन की वस्तुओं को हमेशा व्यवस्थित रखना चाहिए। किचन में चूल्हा ऐसी जगह रखें, जहां से दरवाजा आसानी से दिख सके। यदि ऐसा संभव न हो, तो सामने शीशा लगाया जा सकता है। इससे दरवाजे का प्रतिबिंब दिखाई देगा। किचन में खाना बनाते समय गृहणी का मुंह पूर्व की ओर होना चाहिए। इस उपाय से 'ची' ऊर्जा का संतुलन बना रहेगा।

(6) चूंकि किचन में यांग ऊर्जाओं का प्रभाव अपेक्षाकृत ज्यादा होता है, अत: वहां हल्के रंगों का प्रयोग श्रेष्ठकर होगा। याद रखें, किचन में कभी भी गहरे रंग की नुमाइश न करें। किसी विशेष प्रयोजन में अन्य रंगों के प्रयोग किये जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप दक्षिण क्षेत्र की अग्नि को व्यापारिक व सामाजिक स्तर बढ़ाने के लिए प्रयोग में लाना चाहते हैं, तो यहां लाल रंग का 'एगन्टाइमर' रखा जा सकता है। यदि आप पूर्व दिशा की 'ची' ऊर्जा द्वारा अपने परिवार व स्वयं अपना आध्यात्मिक विकास करना चाहते हैं, तो इस दिशा में काले रंग की कोई वस्तु रखें या पेड़ लगायें। जब किसी विशिष्ट रंग का प्रयोग करें, तो उस रंग का प्रयोग उस क्षेत्र के विपरीत तत्व के साथ नहीं करें। फेंगशुई में काले रंग का संबंध जल से है। उसे कभी भी दक्षिण दिशा में इस्तेमाल न करें, क्योंकि काला रंग अग्नि का प्रतिनिधित्व करता है, अत: सावधानी रखने की जरूरत है।

(7) यदि आपने हाल ही में मकान बनवाया है, तो जल की व्यवस्था नल का कार्य करवाये जाने तक सिंक से किया जा सकता है। क्योंकि सिंक का संबंध जल से है, अत: उसे उत्तर-दिशा में स्थापित करें। फेंगशुई में उत्तर-दिशा को जल तत्व के लिए उपयुक्त माना गया है। यदि किसी कारणवश सिंक की स्थिति उत्तर दिशा में नहीं हो, तो उसे दक्षिण के अलावा किसी भी दिशा में स्थापित कर सकते हैं। दक्षिण दिशा अग्नि तत्व वाली होती है। अग्नि एवं जल का एक ही दिशा में होना शुभ नहीं होता।

(8) कई लोगों को ज्यादा खाने की आदत होती है। फेंगशुई में कुछ प्रयोग करके ऐसी स्थिति पर नियंत्रण पाया जा सकता है। किचन के पूर्वी हिस्से में ताजी जड़ी-बूटियां लगाकर जीवन और संतोष का प्रभाव बढ़ाया जा सकता है। इस उपाय से अधिक खाने व विचित्र तरीके से भोजन करने की कुछ लोगों की आदत से मुक्ति मिल सकती है। इसका असर धीरे-धीरे दिखायी देता है। फेंगशुई में पूर्वी दिशा को ऊर्जा व स्थिति के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

(9) कहते हैं कि सपनों से भी प्यारा होता है किसी का घर संसार। हर व्यक्ति की यही कामना होती है कि उसका घर कभी न टूटे, पारिवारिक सदस्यों में प्रेम व स्नेह बना रहे, विश्वास का धागा कभी टूटे नहीं। अगर आपका संयुक्त परिवार है, तो पारिवारिक सदस्यों में छोटी-मोटी बातें होती रहती हैं, लेकिन अगर घर में नई-नई बहू आयी हो, तो सास बहू के रिश्ते में कभी खटास न हो, उनका प्रेम व स्नेह संबंध सदा एक दूसरे पर कायम रखा जा सके, इसके लिए आवश्यक है कि दोनों का प्रसन्न मुद्रा में साथ खिचवाया गया चित्र घर में लटकाएं। यह अत्यंत प्रभावकारी तरीका है। परिवार के सदस्यों में मिलजुल कर रहने की भावना विकसित करने के लिए बैठक के दक्षिण पश्चिम ओर, कोने में सपरिवार प्रसन्नचित्त मुद्रा में चित्र शयनकक्ष में लगाएं। स्थान, दक्षिण-पश्चिम दिशा में कोना सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है।

(10) मनुष्य को कभी भी प्रवेश द्वार की ओर पैर करके नहीं सोना चाहिए। चीन में दरवाजे की ओर पैर करके सोने से उस घर में कलह, बीमारी व अन्य समस्याएं सामने आती हैं। ऐसा माना जाता है कि उस घर के कुल देवता नाराज हो गए

हैं, अत: कोई भी अनिष्ट हो सकता है। कहा जाता है कि दरवाजे की ओर पैर करके सोने वाला व्यक्ति जल्दी मौत के मुंह में चला जाता है। अत: इस बात का सदैव ध्यान रखें कि प्रवेश द्वार की ओर पैर करके कभी न सोएं। सोते समय आपका सिर भी सीधे दरवाजे की ओर न हो। यह यिन स्थिति कही जाती है। इसका मनुष्य के जीवन पर उल्टा असर पड़ता है। अपना सोने का पलंग दरवाजे की दांयी अथवा बांयी ओर खिसका दें।

(11) सोने के कमरे में डबल बेड हमेशा एक ही गद्दे वाला होना चाहिए। इससे दम्पत्ति में प्यार व स्नेह प्रगाढ़ होता है। उनकी आपसी अंडरस्टैंडिंग मजबूत होती है। कई घरों में डबल बेड पर दो-दो अलग-अलग गददे होते हैं। ऐसे घरों में आमतौर पर पति-पत्नी के बीच कलह या मनमुटाव की घटनाएं देखी जा सकती हैं। वहां तलाक की भी नौबत अक्सर सामने आती है। ज्योतिष के अनुसार, यदि पति-पत्नी की सौभाग्यशाली दिशायें प्रथक-प्रथक हों, तथा दोनों ही कमाने वाले हों, तो यह तब्दीली जरूर होती है।

(12) घर की शांन्ति व समृद्धि के लिए घर में सजावट की सामग्रियों अथवा वस्तुओं में हिंसापूर्ण चित्रों व चिन्हों का परित्याग करें। ये चित्र अथवा चिन्ह घर के सदस्यों में आपसी तनाव, मतभेद व वैमनस्यता को उकसाते हैं। कई बार देखा गया है कि पिता-पुत्र, भाई-भाई, सास-बहू, पति-पत्नी अथवा माता-पुत्र में लड़ाई-झगड़े के ये कारण भी बनते हैं। कुछ लोग तर्क देते हैं कि रामायण व महाभारत के युद्ध वाले दृश्यों को मकान में स्थान देना अशुभ नहीं हैं, पर मैं आपको यह सलाह देता हूँ कि उनसे बचें। उनके बजाए आप राम-सीता का चित्र लगाएं। महाभारत के श्रीकृष्ण का चित्र लगायें। फेंगशुई विद्या धार्मिक कृत्यों से भी ऊपर है, सर्वोच्च है।

(13) फेंगशुई में घरों में आलमारी रखने का स्थान निर्धारित किया गया है। आलमारी को खोलने व बंद करने के तरीके बताए गए हैं। आलमारी में वस्तुओं को रखने के तरीके भी हैं, जो फेंगशुई पर आधारित हैं व ऊर्जा के समग्र व सर्वोच्च विकास के लिए जरूरी हैं। यदि पुस्तकें कमरे की खुली आलमारी में रखी जाएं, तो यह अशुभ ऊर्जा या दमघोंटू ऊर्जा उत्पन्न करती हैं। चाहे आफिस हो या घर-पुस्तकों की खुली हुई आलमारियां चाकुओं के सामान होती हैं अर्थात् यह नकारात्मक ऊर्जा पैदा करके अथवा उसकी अधिकता बढ़ाकर सकारात्मक ऊर्जा को नष्ट कर देती है। फेंगशुई में यह सख्त निर्देश दिया गया है कि आलमारी को कभी भी खुली हुई अवस्था में न रखें। इसके विपरीत आचरण करने वाला व्यक्ति रोगी व शोकी होता है। परिवार के सदस्यों में कुंठा व डिप्रेशन की प्रवृति देखी जा सकती है। शुरू में उसका प्रभाव नजर नहीं आता, लेकिन धीरे-धीरे स्थिति जानलेवा होने लगती है। फेंगशुई में बताए गये उपाय में आलमारियों में दरवाजे लगायें जाएं और उपयोग के बाद उन्हें बंद रखे जाएं।

(14) लोग अपने घरों में आधुनिक सुख-सुविधा के तमाम सामान भरने लगे हैं। उनमें विद्युत उपकरण भी हो सकता है। घरों की साज-सज्जा में व्यवहृत किए जाने वाले सामानों को ऊर्जा के सदृश रखना चाहिए। जैसे विद्युत उपकरण को ही ले लें, उन्हें बैठक की पश्चिमी दीवार अथवा पश्चिमी कोने में व्यवस्थित करना चाहिए। ऐसी अवस्था में ये उपकरण घर के सदस्यों के लिए अत्यन्त सौभाग्यशाली सिद्ध होते हैं। हाई-फाई उपकरण धातु तत्व के प्रतीक हैं। उन्हें पश्चिम दिशा में स्थान देना उपयोगी होता है। बेडरूम में टी.वी रखने की उपयोगी जगह है-पलंग से दूर, लेकिन सामने

रसोईघर, घर के सभी कमरों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अत: किचन को हमेशा साफ-सुथरा तथा किचन की वस्तुओं को हमेशा व्यवस्थित रखना चाहिए। किचन में चूल्हा ऐसी जगह रखें, जहां से दरवाजा आसानी से दिख सके। यदि ऐसा संभव न हो, तो सामने शीशा लगाया जा सकता है। इससे दरवाजे का प्रतिबिंब दिखाई देगा। किचन में खाना बनाते समय गृहणी का मुंह पूर्व की ओर होना चाहिए। इस उपाय से 'ची' ऊर्जा का संतुलन बना रहेगा।

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

Free-eBooks.net